पडिया बहल। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्छलानंद सरस्वती महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बिन्दु।

सुनाम (पंजाब)। सांसद विजय इंदर सिंगला, संत बाबा परमानंद, संत बाबा प्रीतम दास, राजिंदर दीवाजी, ब्र.कु.उषा तथा ब्र.कु.विजय दीप प्रज्जवलित करते

जबलपुर (नेपियर टाउन)। कालेज के चुने हुए प्रतिनिधियों के सम्मान समारोह में लंदन की ब्र.कु.रेणु, पवन पांडे, डॉ.श्याम रावत, ब्र.कु.भावना तथा प्रतिनिधि।

अयोध्या। शोभायात्रा के पश्चात ब्र.कु.मुकेश, ब्र.कु.शशि, रामजन्मभूमि के निर्माण अध्यक्ष श्री जन्मेजयशरण महाराज तथा अन्य समूह चित्र में।

सूरत (मजूरा गेट)। भारत पेट्रोलियम कम्पनी के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.सोनल। साथ हैं मैनेजर गौरव जी तथा अन्य।

भावना बहुत बड़ी चीज है। बड़ो के प्रति आदर रखना, साथियों के प्रति सहयोगी बनना और छोटों के प्रति स्नेह दिखाना-यह सब भावना के ऊपर निर्भर होता है। अगर भावना नहीं है तो ये सब कर नहीं पाते, जीवन सूखा-सूखा रहता है। सम्बन्ध में सरसता नहीं होती , जीवन नीरस होने लगता है, चिड़चिड़ापन बढ़ने लगता है। शरीर भी बीमार किसलिए पड़ता है? उसको कोई-न-कोई चीज की कमी होती है। इसलिए डॉक्टर कहते हैं कि फलानी चीज को बढ़ाओ, फलानी चीज को कम करो। उसी प्रकार, आत्मा को ज्ञान, शक्ति,अनुभव सब होते हुए भी अगर उसमें भावना नहीं है तो भी वो ठीक नहीं रहेगी। भावना एक ऐसी चीज है जो पत्थर को पानी कर देती है।

यह हमारी सभ्यता है

आप देखिये, जब आप ईश्वरीय परिवार से मिलते हैं तो आपको क्या फीलिंग आती है? ये भविष्य के देवी-देवतायें हैं। देखने में कैसे भी लगते हों परंतु दैवी आत्मायें हैं ना! भगवान के बने हैं, इन्होंने त्याग किया है। दुनिया के सब रसों को त्याग, सुखों को त्याग बाबा के बने हैं। उन्हों को सम्मान देना चाहिए, उनके साथ प्रेम और शान्ति से बर्ताव करना चाहिए। यह हमारी सभ्यता है। अगर कोई राष्ट्रपति भवन जाता है तो वहाँ के लोग क्या करते हैं? उनको प्यार से बिठाते हैं, पहले पानी देते हैं, बाद में चाय आदि देते हैं। उनका सत्कारा किया जाता है। यह वहाँ की औपचारिकता है। जो भी राष्ट्रपति भवन में मेहमान बनकर जायेगा उसको सम्मान दिया जायेगा। ऐसे उनके नियम बने हुए हैं। किसी राष्ट्र का राष्ट्रपति आता है तो उसको क्या करना है, किसी देश का राजदूत आता है तो उसको क्या करना चाहिए आदि-आदि नियम बने हुए हैं। ईश्वरीय परिवार को देख हमें आपस में खुश होना चाहिए। ये धरती के सितारे हैं, होवनहार देवतायें हैं, त्यागी, योगी, ज्ञानी ब्राह्मण-देवता हैं। हम यह भूल जाते हैं इसलिए एक-दूसरे के बीच रुहानियत कम हो जाती है। सब आत्मायें तो सितारे हैं ही लेंकिन ये ब्राह्मण-आत्मायें वो सितारे हैं जो ब्रह्मा बाबा ने शुरु-शुरु में देखा था कि ऊपर से दो सितारे उतर आये और उतरते-उतरते शहजादा- शहजादी बन गये। ब्रह्मा बाबा को कहा गया कि तुम्हें ऐसी दुनिया बनानी हैं। ये संगमयुग की ब्राह्मण कुलभूषण आत्मायें हैं जो भविष्य में पूज्य देवी -देवता बनने वाली हैं।

हम लोग आपस में मिलते हैं और बातें करते हैं, उसको देख लोग हैरान हो जाते हैं कि इनका तो अलग ही तरीका है, देखो ये आपस में कितनी खुशी से मिलते हैं, सम्मान से देखते हैं। मैंने खुद देखा है, लोग हमें देख आश्चर्य खाते हैं। यह हमारी नयी सभ्यता, नयी संस्कृति, यह देवी-देवताओं की झलक है, यह ब्राह्मण परिवार में ही मिलती है। एकदम देवी-देवता थोड़े ही आ जायेंगे ? यहाँ उन जैसे लक्षण दिखायी देंगे तब तो वहाँ जाकर देवी -देवता बनेंगे! यह तो ठीक है, मैं आत्मा हूँ, मैं दूसरों में भी आत्मा बिन्दी को देखता हूँ। आत्मा बिन्दी में क्या देखें ? देखना है कि यह विशेष आत्मा है, यह देव-आत्मा है, यह वह श्रेष्ठ आत्मा है जिसको भगवान ने चुना है, स्वयं ज्ञान के सागर भगवान ने इनकी बुद्वि में ज्ञान डाला है। भगवान ने इनको कितना प्यार दिया है! इनके मूल्य को भी हमें समझना चाहिए ना! एक-दूसरे का सत्कार करना यह ब्राह्मण कुल की संस्कृति है, इसमें भावना समायी हुई है।

भावना होती है तो बहुत कुछ होता है। आदमी सब-कुछ करने के लिए और त्यागने के लिए भी तैयार हो जाता है। आप रोज बाबा की मुरली, अमृतवाणी सुनते होंगे। ऐसे कोई भी आत्मा दुनिया में नहीं सुनाती होगी। लौकिक में, मैंने भी बहुत संन्त-महात्माओं , बु जीवियों के भाषण सुने है, पुस्तकें पढ़ी हैं लेकिन उनमें शब्दों का चमत्कार होता है, बोलने की

भावना और निश्चय

कला होती है, आकर्षण करने वाले हाव-भाव होते है। बाबा की एक मुरली में इतनी सारी बातें होती हैं, इतना सारा ज्ञान होता है और ऐसे भाव से बाबा कहते हैं कि मैं चैलेंज करके बताता हूँ कि दुनिया में और कहीं, किसकी ऐसी वाणी है ही नहीं। जिनको भावना नहीं है वो यही कहेंगे कि क्या रोज-रोज बाबा वही कहता है कि अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। कई ब्राह्मण ऐसे भी हैं जो यह कहेंगे कि फलाने आचार्य की किताबें पढ़ो, उसकी कैसेट सुनो, फलाने स्वामी जी की पुस्तकें पढ़ो, फलाने दार्शनिक के दर्शन और चिंतन की किताबें पढ़ो, फलाने आश्रम की आध्यात्मिक मैगजिन पढ़ो। बेशक उनके भाषण और लेखों में अच्छे शब्दों का इस्तेमाल होगा, शब्दों की झंकार होगी, भक्तिमार्ग की बातें, मिसालें, कहानी, चुटकले, दृष्टान्त बहुत होंगे लेकिन उनमें त्याग कराने की शक्ति, दिव्यता भरने की शक्ति, जीवन सुधारने की शक्ति, जीवन परिवर्तित करने की शक्ति, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत की जानकारी-वो नहीं होता। वो सिर्फ भगवान की वाणी में है। और किसी में नहीं

ब्रह्मा बाबा, जिन्होंने अपना तन भगवान को उधार दिया है, वो कहते हैं कि '' मैं भी आप जैसा विद्यार्थी हूँ, मैं भी बाबा की मुरली सुनता हूँ, मैं बाबा के बाजू में ही बैठा रहता हूँ, सबसे पहले में ही सुनता हूँ, मैं भी पुरुषार्थ करता हूँ।'' देखिये, यह कितनी ऊँची भावना है कि ब्रह्मा बाबा भी अपने को हमारे जैसा एक साधक और स्टूडेण्ट समझते हैं। जब तक भावना नहीं होगी तब तक अनुभव नहीं होंगे। कई लोग कहते हैं कि '' जगदीश भाई, बाबा ने कल भी वही कहा था, आज भी वही बात कही हैं।'' मैं कहता हूँ, आपने भावनायुक्त होकर मुरली सुनी नहीं है, इसीलिए आपको ऐसा लगता है। भावना आत्मा को ग्रहण करने के योग्य बनाती है, जिससे प्राप्ति होती है। भावना न होने के कारण मन गहराई में गया नहीं है, ज्ञान की गहराई को समझा नहीं है। क्या आप मुरली सुनकर आनन्दित होते हैं? गद्गद होते है? रिफ्रेश होते हैं या समझते हैं कि बाबा तो वही-वही सुनाता रहता है?

भावना क्या है, निश्चय क्या है?

जब बाबा मुरली चलाने बैठते थे, तो स्वयं बच्चों को कहते थे कि तुम मुझे मत देखो, मुरली सुनाने वाला मैं नहीं हूँ, वो है, ऊपर वाला, धनी, ज्ञान का सागर। कहने का भाव यह है कि सर्वशक्तिवान शिव बाबा ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर मुरली सुना रहा है- यह भावना रखो। निश्चय यह है कि बुद्धि से समझ लिया कि यह ठीक है। मैनें मान लिया, स्वीकार कर लिया। मैनें समझ लिया। भावना में श्रद्धा है, प्रेम है। भावना में और कई चीजें हैं जो निश्चय में नहीं हैं। निश्चय तो हमारी बुनियादी चीज है। निश्चय जरुर चाहिए लेकिन निश्चय के अतिरिक्त और चीजों की भी जरुरत होती है। हम आत्मा है, परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं, परमात्मा परमधाम निवासी है, सर्वव्यापी नहीं है- यह निश्चय है। हे बाबा, मेरा जीवन तुम्हारा है, मैं तुम्हारे पर कुर्बान हूँ- यह भावना है। ब्राह्मण-आत्मा में सेवा, धारणा, योग और ज्ञान नम्बरवार होते हैं, क्यों? क्योंकि भावना नम्बरवार होती है। भावना के आधार पर ही पुरुषार्थ और पद का अंतर होता है। जैसे, दादी जी हैं। दादी जी के बारे में आप समझते हैं कि दादी जी आदि-रत्न हैं, अच्छी ज्ञानी हैं, महान् योंगिनी हैं, त्यागी हैं, सरल हैं, सबकी स्नेही हैं- यह है निश्चय। लेकिन दादी जी महान् हैं, बाबा ने ही इनको निमित्त बनाया है, इनका फैसला बाबा का फैसला है क्योंकि ये बाबा के स्थान पर बैठीं हैं, बाबा ने ही इनको अपने आसन पर बिठाया है,इनकी हर बात हमें मंजूर है- यह भावना है।

- ब्र.कु.जगदीशचंद्र हसीजा